बिहारी के काव्य में समाज का यथार्थ स्वरूप

डॉ. ओमवीर सिंह
हिन्दी विभाग
विवेकानन्द कॉलिज, दिल्ली

सारांशिका

परम्परावादी उपमानों के अलावा सामान्य संसार के उपमानों का विधान करने का प्रयास भी बराबर किया है इसलिए यह इतने प्रतिभावान थे कि अपनी अनुभूतियों से अपने काव्य को चमत्कार प्रदान किया जिसका प्रभाव इनके मुक्तक में देखने को निश्चित रुप से मिलता है। इनके काव्य के मान का कारण चमत्कार नहीं बल्कि ह्रदय तथा कला दोनों पक्षों का संयोग ही कहना चाहिए क्योंकि उनमें सभी के प्रति एक सम्भाव बना हुआ था। नीति की अनेक उक्तियाँ उनके काव्य में देखने को मिलते हैं और सत्सैया में अनेक सूक्तियों की नीति भरी व्यवहारिकता एवं दृष्टान्त हैं। प्रेम के क्षेत्र में देखा जाए तो सभी दृष्टियों से एक ही शास्त्र की परम्परा को इन्होंने निभाया है और साथ ही साथ शीलता के स्वरुप की भी मर्यादा का ध्यान रखा है। बिहारी के समान इतनी कम रचना करके इतना अधिक सम्मान प्राप्त करने वाले हिन्दी में कोई अन्य कवि नहीं है बल्कि कहना चाहिए कि कवि बिहारी ने नैतिकता का बोध समाज के सम्पूर्ण व्यवहार में बराबर दिखलाया है जबकि यह कान्य कुब्ज ब्राह्मण है। फिर भी इन्होंने किसी के भी ऊपर भेदभाव के प्रस्तुतियों को नहीं दिखलाया पड़ता है।

मुख्य शब्द : बिहारी का काव्य, समाज, यथार्थ, परम्परावादी, सत्सैया।

प्रस्तावना

बिहारी के काव्य में समाज के अन्दर होने वाले सभी व्यवहार की प्रस्तुतियों का चित्रण हमें देखने को मिलता है क्योंकि समाज में कवि जैसा भोगता है वैसा ही चित्रण अपने काव्य में करता है वर्तमान प्रस्तुतियों में कवि की सोच एवं विचार की स्थिति उसकी कविताओं में परिलक्षित होती है इसलिए काव्य के लिए अपेक्षित सभी विषयों का सामान्य परिचय कवि बिहारी को था। उन सभी विषयों की विशेषज्ञता तो नहीं कह सकते किन्तु यथार्थ परिवेश की प्रस्तुति इनके काव्य में देखने को मिलती है। इनकी रचनाओं में ज्योतिष की कई बातें अवश्य देखने को मिलती है जो असाधारण है किन्तु सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक व्यवहार की प्रस्तुति इनके काव्य में दिखलाई पड़ती है जिनमें लोक ज्ञान का चित्रण हमें भली–भाँति दिखाई देता है। अप्रस्तुत रुप से तो सामान्य काव्य इन्होंने मर्मज्ञता भी दिखाई है। लोक ज्ञान और शास्त्र ज्ञान की व्यवहारिकता का ज्ञान इन्हें बहुत अच्छा था जिसके परिणामस्वरुप परम्परावादी लोक रीति को भी इन्होंने अपने काव्य में निभाया है। इनके काव्य में वर्णित सामग्री, श्रंगार को लिए हुए हैं। प्रेम के संयोग पक्ष में इन्होंने नायिका के नक्षिक वर्णन को जितनी तार्तम्यता से प्रस्तुत किया है उतनी गहराई किसी अन्य कवि में नहीं देखने को मिलती है। इसके साथ–साथ ऋतुओं का वर्णन भी कवि बिहारी के काव्य में देखने को मिलता है। अतः विभाव पक्ष के विधान में कवि बिहारिणी रुप वर्णन पर अधिक ध्यान दिया है किन्तु ह्रदय में होने वाले प्रभाव की प्रस्तुति बहुत कम दिखलाई पड़ती है। वास्तव में देखा जाए तो नायिका के नक्षिक रुप सौन्दर्य पर इन्होंने अधिक रचना उसके नेत्रों पर अधिक की है जिसके कारण नायिका का संचार, बेधकता, चंचलता, चपलता, विशालता का स्वरुप दिखलाई पड़ता है। कहीं–कहीं पर नायिका सौन्दर्य के लिए रुपक, उत्प्रेक्षा, उपमा जैसे अलंकारों का भी सहारा लिया गया है। श्रंगार के संयोग पक्ष में नायिका की सौन्दर्यता, दीप्ति, कोमलता पर अधिक विचार किया है। वास्तव में देखा जाए तो बिहारी ने पूर्वानुराग का चित्रण अधिक किया है जबकि प्रवास का चित्रण इतना अधिक नहीं किया है। यहाँ पर देखने योग्य यह है कि नायिका के मान विरह के कारण नदी एवं तारा नहीं सूखते हैं बल्कि विरह की ऊहात्मक का स्वरुप देखने को मिलता है। प्रेम का विस्तार नायिका के रुप और सौन्दर्य के लिए किया गया है किन्तु विरह वर्णन में कहीं–कहीं पर नायिका की स्वाभाविक स्वरुप को दिखलाने की कोशिश कवि बिहारी ने की है किन्तु इस विरह की व्यंजना में अवलम्बन का सहारा भी लिया गया है। कवि बिहारी की कविता श्रंगार रस से परिपूर्ण है क्योंकि नायक अथवा नायिका की बहुत सारी चेष्टायें अथवा उनके हाव–भाव काव्य में देखने को मिलते हैं इसलिए अनुभव की सम्यक योजना में इनकी विशेषता है और साथ ही साथ कहीं न कहीं उनकी चेष्टाओं का चित्रण भी शास्त्रीय परिभाषा के स्वरुप उनके हाव–भाव में किया गया है। अगर देखा जाए तो रुप माधुरीय की दृष्टि से चित्रित अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। सत्सैया काव्य में इसलिए अनेक रसों के स्वरुप को देखा जा सके जिसका उदाहरण मृजा राजा, जय शाह की प्रशंसा के छन्द, वीर रस के में देखे जा सकते हैं और हास्य रस में पारा वाले वैध एवं मारक जारज युग वाले ज्योतिषी चित्रण रुपी दोहे में देखने को मिलते हैं और इसी तरह प्रत्यीय दोष पौराणिक जी भी हास्य के अवलम्बन को लिए हुए हैं। साथ ही साथ कवि ने भक्ति के उद्‌गार को भी प्रकट किया है क्योंकि यह निम्बार सम्प्रदाय में दीक्षित थे जिनका प्रभाव उनके समस्त काव्य पर दिखलाई देता है इसलिए निर्गुण तथा सगुण में अथवा राम एवं कृष्ण में इनको कोई भेद नहीं दिखलाई देता है। वास्तव में इनकी भक्ति में कथनी और करनी में कहीं भी अन्तर देखने को नहीं मिलता है इसलिए इनके काव्य की उक्तियाँ बड़ी रस से परिपूर्ण हैं और कहीं–कहीं चमत्कार हेतु काव्य में अलंकारों के अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। कई बार देखने में केशव कवि केशी चमत्कारिकता इनके काव्य में भी देखने को मिलती है। अतः परम्परावादी उपमानों के अलावा सामान्य संसार के उपमानों का विधान करने का प्रयास भी बराबर किया है इसलिए यह इतने प्रतिभावान थे कि अपनी अनुभूतियों से अपने काव्य को चमत्कार प्रदान किया जिसका प्रभाव इनके मुक्तक में देखने को निश्चित रूप से मिलता है। इनके काव्य के मान का कारण चमत्कार नहीं

बल्कि हृदय तथा कला दोनों पक्षों का संयोग ही कहना चाहिए क्योंकि उनमें सभी के प्रति एक सम्भाव बना हुआ था। नीति की अनेक उक्तियाँ उनके काव्य में देखने को मिलते हैं और सत्सैया में अनेक सूक्तियों की नीति भरी व्यवहारिकता एवं दृष्टान्त हैं। प्रेम के क्षेत्र में देखा जाए तो सभी दृष्टियों से एक ही शास्त्र की परम्परा को इन्होंने निभाया है और साथ ही साथ शीलता के स्वरुप की भी मर्यादा का ध्यान रखा है। बिहारी के समान इतनी कम रचना करके इतना अधिक सम्मान प्राप्त करने वाले हिन्दी में कोई अन्य कवि नहीं है बल्कि कहना चाहिए कि कवि बिहारी ने नैतिकता का बोध समाज के सम्पूर्ण व्यवहार में बराबर दिखलाया है जबकि यह कान्य कुब्ज ब्राह्मण है। फिर भी इन्होंने किसी के भी ऊपर भेदभाव के प्रस्तुतियों को नहीं दिखलाया पड़ता है। ''बिहारी के श्रंगारी दोहों में सामन्ती जीवन का वैभव विलास ही नहीं चित्रित है, वे सामान्य गृहस्थ के दैनिक जीवन के भी सरस चित्र खींचते हैं। देवर, भाभी, जेठ, सास, ननद, पड़ोसन, ज्योतिष, वैद्य आदि के सन्दर्भ में श्रंगार के चित्र उकेरते हैं। इनका विषय सीमित है परन्तु आधार फलक सीमित नहीं। वस्तुतः श्रंगार अन्य अनेक मनोविकारां में नहीं टकराता, इसीलिए संकीर्ण लगता है।''1 इनके एकाध दोहों में इन्होंने सामन्तों को ठीक रास्ते पर चलने का उपदेश दिया है। यथा–

स्वारथ सुकृत न श्रम वृथा, देखि बिहंग बिचारि।
बाज परायेपानि पर, तू पच्छीन न मारि।।

इसी तरह से कवि बिहारी ने नायिका के विविध अंगों के सौन्दर्य वर्णन को भी प्रस्तुत किया है। सत्सैई काव्य में नायिका के नक्षिक वर्णन, जंघा वर्णन, कटि कुच, चिबुक, अधर, नासिका, नयन, भौंह का चित्रण इनकी कविता में देखने को मिलता है। जैसे–

पग पग मन अगमन परति, चरन अरुन दुति झूलि
ठौर–ठौर लखियत उठे, दुपहरिया से फूलि।।

सत्सैया का काव्य जगत में इतना प्रचार और प्रसार हुआ कि कोई भी साहित्यकार बिना पढ़े नहीं रह सकता इसलिए बिहारी के पश्चात् होने वाले प्रसिद्ध से प्रसिद्ध कवियों ने उन पर अनेक किताबें लिखीं हैं जिसका प्रभाव अनेक दशकों में पड़ता रहा है जिसके परिणामस्वरुप नए रंग–ढंग से सत्सैया की ईकायें लिखीं गई हैं। अतः वर्तमान समय में भी हिन्दी में कवि बिहारी के काव्य के ऊपर अनेक ईकायें हमें देखने को मिलती हैं जिनको लोग बड़े मनोयोग से पठन–पाठन करते हुए उसको काव्य जगत में अधिक प्रसारित कर रहे हैं। समाज में देखा जाए तो रामचरितमानस काव्य को छोड़कर हिन्दी में ऐसा दूसरा काव्य ग्रन्थ देखने को नहीं मिलता जिसके भक्त सम्प्रदाय को कवि बिहारी ने न उठाया हो इसलिए उनकी भाषा की शब्दावली का प्रयोग उनके बन्धे हुए पदों की व्यवहारिकता में देखने को मिलता है जिससे भाषा में सजीवता का स्वरुप देखने को मिलता है। भाषा और भाव को ही नहीं बल्कि उनकी शैली में भी बहुत यथार्थ स्वाभाविकता का स्वरुप प्रतिबिम्बित उनके काव्य में प्रस्तुत हुआ है। भाषा की कसावत, भाव पद्धति सबकुछ उनके काव्य में बड़े ही सजीव ढंग से प्रस्तुत हुआ है इसलिए रत्न हजारा के पचासों दोहे सत्सैया के भाव को लेकर प्रस्तुत किए गए हैं। ''रस निधि पर बिहारी का अधिक रंग चढ़ गया था। सत्सैया को छोड़कर जिन अन्य कवियों ने उनका अनुमोलन किया और उनकी शैली पकड़ी उनमें तीन प्रमुख हैं। रसलीन, पदमाकर में, दूसरो रत्नाकर में। बिहारी की कविता का सेवन करते जाता है अर्थात् देखों समय का फेर कि सभी लोग पिण्ड दान के कार्य में ऐसे प्रवर्त है कि सुवा यानी सुख अथवा तोता बेचारा तो पिन्जरे में पड़ा मर रहा है। किसी को उसके दाना–पानी का भी ध्यान नहीं है और इस प्रकार के अवसर पर दाना–पानी देकर वे न इहां नागर बढ़ी दोहे में कवि मुर्ठ मण्डी में पड़े हुए किसी गुणी के गुण का निरादर देखकर उससे कोई चतुर्थ गुलाब पर कोई नियुक्ति करके कहता है कि ये इहां टेहरी आव अर्थात् शोभा या प्रतिष्ठा बढ़ी हुई है अर्थात् कुछ साबित होता है। इन गवारों की बस्ती में तो तू फूला हुआ भी अर्थात् विकसित गुण होने पर भी अनुफूला यानी मूल भाव यह है कि यहाँ तेरे गुण का विकास होना या न होना बराबर है। चल्यौ जाई, ह्यां को करै... दोहे में बिहारी कहते हैं कि किसी महान गुणी पुरुष को अपने गुणों का ग्राहक प्राप्त करने की आशा से निकृष्ट जनों की मण्डली में आया हुआ देखकर कोई सज्जन, हाथी के व्यापारी पर अन्योक्ति करके उनसे वहाँ से चले जाने की प्रस्तावना करता है अर्थात् अरे हाथी के व्यापारी, महान गुणी तू यहाँ से चला जा। यहाँ हाथियों के अर्थात् तेरे महान गुणों के व्यापार अर्थात् क्रय–विक्रय, गुण–ग्राहकता कौन करे। क्या तू यह बात नहीं जानता कि इस पुर अर्थात् इस मण्डली में सब निकृष्ट लोग ही बसते हैं जिनको नित्य गदहों से काम पड़ता है। फिर वे भला तेरे हाथियों अर्थात् गुणों को क्यों पूछने लगे। नीच हियैं हुलसे रहैं... दोहे में कवित की उक्ति है कि नीच मनुष्य गेन्द्र के स्वभाव या प्रकृति धारण किए हुए सदा निरादृत होने पर भी अपने हृदय में हुलसे अर्थात् फूले रहते हैं। ज्यों–ज्यों वे माथे पर चोट खाते हैं अर्थात् निरादृत होते हैं। त्यों–त्यों ऊँचे होते हैं अर्थात् अपने को श्रेष्ठ मानते हैं, ऊपर उछलते हैं।'' इस तरह से देखा जाए तो कवि बिहारी के काव्य में समाज की नैतिकता, ज्योतिष एवं धार्मिकता का बराबर समन्वय देखने को मिलता है। कहीं पर भी ऐसा नहीं लगता है कि जिसका वर्णन कवि ने अपने काव्य में जिसका भी किया है कि कवि को उसका ज्ञान न हो। इस प्रकार से देखा जाए तो महाकवि बिहारी के काव्य में कहीं भी ऐसी अनैतिक स्वरुप की प्रस्तुति नहीं दिखलाई पड़ती कि जिससे उनका काव्य महानता की कसौटी पर खरा न उतरता है।

सन्दर्भ सूची :

1. डॉ० मौ० शब्बीर एवं डॉ. शशि कुमार 'शशिकान्त', हिन्दी भाषा और साहित्य भाषा पृ.सं. 66, के.एल. पचौरी प्रकाशन, 2015।
2. डॉ० मौ० शब्बीर, हिन्दी भाषा और साहित्य भाषा, पृ.सं. 56, के. एल. पचौरी प्रकाशन, 2015।